समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : रु. ३/-

लोक कल्याण सेतु

• १५ फरवरी २०१२ • वर्ष : १५
• अंक : ८ (निरंतर अंक : १७६)

मासिक समाचार पत्र

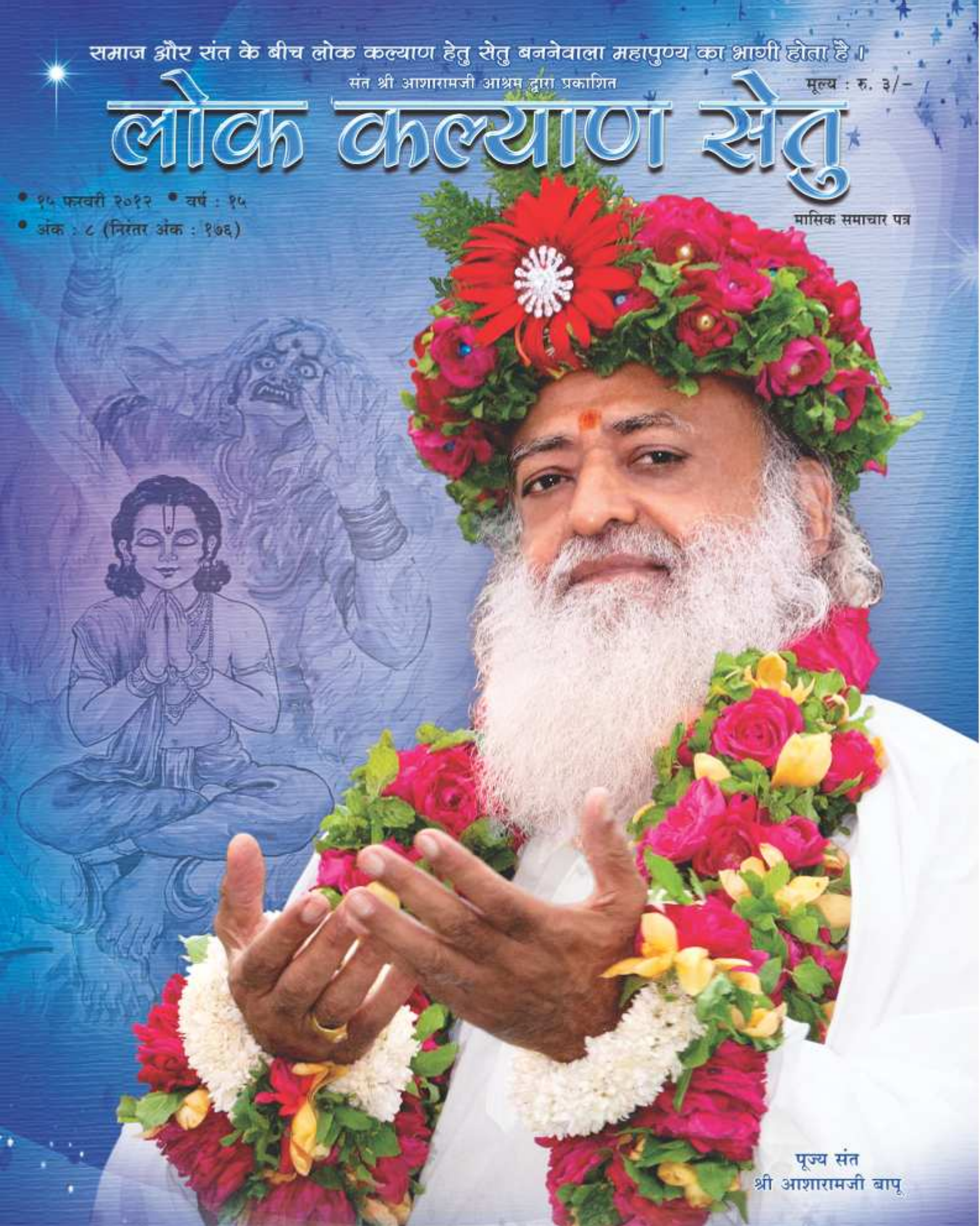

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

ज्ञान की आग से अज्ञानरूपी होलिका भस्म हो जाती है तथा जीवरूपी प्रह्लाद मुक्त हो जाता है ।

होली : ७ मार्च

प्राचीन वैज्ञानिक उत्सव : होली

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

होली का उत्सव वैदिक काल में भी मनाया जाता था । इस उत्सव पर ऊँची मति के लोग दान-पुण्य करते थे एवं छोटे लोग ढोल बजाकर दान-दक्षिणा प्राप्त कर उत्सव मना लेते थे । किंतु आज इस पवित्र उत्सव पर नशा करके एक-दूसरे को बीभत्स गालियाँ देकर, रासायनिक रंगों का प्रयोग करके इसका स्वरूप ही बिगाड़ दिया गया है । हमें उचित है कि इस अवसर पर प्रभु-गीत गायें और प्राकृतिक पुष्पों (टेसू के फूल आदि) का सात्त्विक रंग एक-दूसरे को लगायें, रस्सा-खींच, लकड़ी-खींच जैसे खेल खेलकर उमंग-उत्साह बढ़ायें । सात्त्विक रंग तन को तंदुरुस्ती देंगे, सात्त्विक खेल मन को प्रसन्नता देंगे और प्रभु के गीत हृदय को पवित्र करेंगे ।

गर्मी के दिनों में सूर्य की किरणें हमारी त्वचा पर सीधी पड़ती हैं, जिससे शरीर में गर्मी बढ़ती है । हो सकता है कि शरीर में गर्मी बढ़ने से गुस्सा बढ़ जाय, स्वभाव में खिन्नता आ जाय । इसीलिए होली के दिन प्राकृतिक पुष्पों का रंग बनाकर एक-दूसरे पर डाला जाता है, ताकि शरीर में गर्मी सहन करने की क्षमता बढ़ जाय और सूर्य की तीक्ष्ण किरणों का उस पर विकृत असर न पड़े ।

भारतीय संस्कृति के ये पावन त्यौहार एवं उनको मनाने के सात्त्विक तौर-तरीके केवल मन की प्रसन्नता ही नहीं बढ़ाते, तन की तंदुरुस्ती एवं बुद्धि में बुद्धिदाता की खबर भी देते हैं, ताकि मानव स्वस्थ, प्रसन्न एवं आनंदित रहे तथा परम आनंदस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति की ओर अग्रसर होकर सब दुःखों से मुक्ति और परमानंद की प्राप्तिस्वरूप मोक्ष को भी पा ले ।

भारतीय संस्कृति की पहचान का एक पुनीत पर्व : होली

'होली' भारतीय संस्कृति की पहचान का एक पुनीत पर्व है। यह पारस्परिक भेदभाव मिटाकर प्रेम व सद्भाव प्रकट करने का एक सुंदर अवसर है, अपने दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों की आहुति देने का एक यज्ञ है तथा अंतर में छुपे हुए प्रभुत्व को, आनंद को, निरहंकारिता, सरलता और सहजता के सुख को उभारने का उत्सव है।

यह रंगोत्सव अनेक विषमताओं के बीच भी समाज में एकत्व का संचार करता है व हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता का परिचय देता है। होली के रंग-बिरंगे रंगों की बौछारें जहाँ मन में एक सुखद अनुभूति प्रकट करती हैं, वहीं यदि सावधानी, संयम व विवेक न रखा जाय तो ये ही रंग दुःखदायी भी बन जाते हैं। अतः इस पर्व पर कुछ सावधानियाँ रखना भी अत्यंत जरूरी है।

प्राचीन समय में लोग पलाश व प्राकृतिक फूलों से बने रंग अथवा गुलाल कुमकुम-हल्दी से होली खेलते थे किंतु वर्तमान समय में रासायनिक तत्त्वों से बने रंगों का उपयोग किया जाता है। ये रंग त्वचा पर चकत्तों के रूप में जम जाते हैं। अतः ऐसे रंगों से बचना चाहिए। यदि किसीने आप पर ऐसा रंग लगा दिया हो तो... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७६ फरवरी २०१२)**

समस्त पापनाशक स्तोत्र

भगवान वेदव्यासजी द्वारा रचित अठारह पुराणों में से एक 'अग्नि पुराण' में अग्निदेव द्वारा महर्षि वसिष्ठजी को दिये गये विभिन्न उपदेश हैं। इसीके अंतर्गत इस पापनाशक स्तोत्र के बारे में महात्मा पुष्कर कहते हैं कि मनुष्य चित्त की मलिनतावश चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन आदि विभिन्न पाप करता है पर जब चित्त कुछ शुद्ध होता है तब उसे इन पापों से मुक्ति की इच्छा होती है। उस समय भगवान नारायण की दिव्य स्तुति करने से समस्त पापों का प्रायश्चित पूर्ण होता है। इसीलिए इस दिव्य स्तोत्र का नाम 'समस्त पापनाशक स्तोत्र' है।

निम्नलिखित प्रकार से भगवान नारायण की स्तुति करें... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७६ फरवरी २०१२)**

सबसे बड़ा मूर्ख !

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

एक सेठ ने अपने नौकर को एक डंडा दिया और कहा : ''इस जगत में तुझे जो सबसे ज्यादा मूर्ख लगे उसको यह डंडा दे देना।''

नौकर सत्संगी था और विनोदी भी।

एक बार सेठ बीमार पड़ा। लोग उसका हाल-चाल पूछने जा रहे थे, नौकर ने भी अपना फर्ज समझा। वह गया और पूछा : ''सेठजी ! कैसे हो ?''

सेठ बोला : ''डॉक्टर ... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७६ फरवरी २०१२)**

गणु की गुरुनिष्ठा

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक बार तुकामाई गणु को लेकर नदी में स्नान के लिए गये। वहाँ नदी पर तीन माइयाँ कपड़े धो रही थीं। उन माइयों के तीन छोटे-छोटे बच्चे आपस में खेल रहे थे।

तुकामाई ने कहा : ''गणु ! गड्ढा खोद।''

एक अच्छा-खासा गड्ढा खुदवा लिया। फिर कहा : ''ये जो बच्चे खेल रहे हैं न, उन्हें वहाँ ले जा और गड्ढे में डाल दे। फिर ऊपर से जल्दी-जल्दी मिट्टी डाल के आसन जमाकर ध्यान करने लग।''

इस प्रकार तुकामाई ने गणु के द्वारा तीन मासूम बच्चों को गड्ढे में... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७६ फरवरी २०१२)**

अपने-आप पर ही फिदा !

एक राजा का एक खूबसूरत लड़का था। राजा नृत्य का बड़ा शौकीन था। एक बार उसने अपने लड़के को एक सुंदरी के वेश में सजवाया और उसका चित्र निकलवाया। दो-पाँच साल बीत गये।

राजा ने मरते समय उस चित्र को एक पेटी में डालकर उस पर ताला लगाया तथा ऊपर राजकीय मुहर मार दी और कहा कि ''इस पेटी को कोई न खोले। मेरी आज्ञा का पालन होता रहे।''

पिता की जगह पर वह राजकुमार राजा बन गया। 'पेटी कोई न खोले' यह सुनकर उसे वह पेटी खोलने की इच्छा हुई। मंत्री ने कहा : ''आपके पिता ने मना किया था। हमको आज्ञा नहीं है।''

मंत्री के मना करने से लड़के को बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा : ''मैं भी तो राजा हूँ। मेरी भी तो आज्ञा चलेगी।''

मंत्री ने कहा : ''आपकी आज्ञा मानता हूँ तो आपके पिता की आज्ञा का उल्लंघन होता है और उनकी आज्ञा मानता हूँ तो आपकी आज्ञा का उल्लंघन होता है।''

राजा को चिंतित देखकर आखिर मंत्री ने उसे चाबी दे दी। चाबी लेकर पेटी खोली तो राजा ने क्या देखा कि... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १७६ फरवरी २०१२)**

आश्रम-संचालित बाल-उत्थान के सेवाकार्य

रायपुर (छ.ग.) तथा बड़सर, जि. हमीरपुर (हि.प्र.) की बालिकाओं में सत्साहित्य का वितरण ।

भांडूप (मुंबई) के विद्यार्थी बुद्धिशक्तिवर्धक भ्रामरी प्राणायाम करते हुए
तथा अहमदाबाद में दिव्य प्रेरणा-प्रकाश प्रतियोगिता का आयोजन ।

बालभोज व भंडारे

बान्द्रा, जि. नागपुर (महा.)

पेठ, जि. नासिक (महा.)

कंधकेलगाँव, जि. बलांगीर (ओड़िशा)

बेल्लारी (कर्नाटक)

आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाकार्य

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2012)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

छारिया, जि. पंचमहाल (गुज.)

गरीबों में कम्बल वितरण

जमशेदपुर (झारखण्ड)

भरतपुर (राज.)

अलीगढ़ (उ.प्र.)

जबलपुर में कम्बल व मिठाई तथा गोरेगाँव, मुंबई में कपड़े, साड़ी, तेल, कम्बल एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण ।

नक्की-प्रागपुर, जि. कांगड़ा (हि.प्र.) में गर्म भोजन के डिब्बों, आटा, दाल, चावल एवं सत्साहित्य तथा भागलपुर (बिहार) में कम्बल, वस्त्र एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण ।